❶
ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द के जीवन, कार्य, इतिहास-लेखन, स्मृतियों के बारे में जानने के लिए
8447-200-200
मिस्ड कॉल करें

वर्ष 48, अंक 5 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 25 नवम्बर, 2024 से रविवार 1 दिसम्बर, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती - ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में फिरोजाबाद (उ.प्र.) में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश व पर्यटन एवं संस्कृति विभाग उ.प्र. द्वारा

स्मरणोत्सव एवं विराट आर्य महाकुम्भ समारोह पूर्वक सम्पन्न

असाधारण दिव्य चेतना के धनी थे - महर्षि दयानन्द - आरिफ मोहम्मद खान, राज्यपाल केरल

नारी शिक्षा, सम्मान और समानता के पुरोधा थे महर्षि दयानन्द
- जयवीर सिंह, पर्यटन एवं संस्कृति मन्त्री, उ.प्र.

भारत परिवर्तन क्रान्ति के सूत्रधार थे महर्षि दयानन्द सरस्वती
- विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

200वीं जयन्ती के स्थान-स्थान पर होने वाले आयोजनों से आर्यसमाज में आई नई जागृति - देवेन्द्रपाल वर्मा, प्रधान

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती एवं आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष पर भारत के कोने-कोने और विश्व में गतिशील आयोजनों की श्रृंखला में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश एवं पर्यटन एवं सँस्कृति विभाग उ.प्र. द्वारा आयोजित "स्मरणोत्सव एवं विराट आर्य महाकुम्भ" आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, सिरसागंज, फिरोजाबाद के प्रांगण में दिनांक 16, 17, व 18 नवम्बर, 2024 को भव्य समारोह पूर्वक संपन्न हुआ।

इस विराट ऐतिहासिक आर्य महाकुम्भ के समापन समारोह में 18 नवम्बर, 2024 को "वेद भारत एवं विश्व, नारी शक्ति वंदन" कार्यक्रम का शुभारम्भ महामहिम राज्यपाल, केरल श्री आरिफ मोहम्मद खान जी, माननीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री जयवीर सिंह, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती पूर्व सांसद, श्री सत्यपाल सिंह पूर्व सांसद, श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., श्री विनय आर्य, महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, स्वामी

- *शेष सामचार एवं चित्रमय झांकी पृष्ठ 4 एवं 6 पर*

प्रधानमन्त्री मोदी जी ने दी जार्ज टाउन, ग्याना में आर्यसमाज स्मारक पर श्रद्धांजलि : 200वीं जयन्ती पर महर्षि का किया स्मरण

विश्वव्यापी आर्य समाज में ग्याना, अमेरिका का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। वहां पर आर्य समाज और डॉ सतीश प्रकाश जी के कुशल निर्देशन में आर्य समाज द्वारा संचालित गुरुकुल वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार, प्रसार और विस्तार में संलग्न है। वहां के सभी आर्यजन और अधिकारी महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं और सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं को 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष पर लगातार प्रचारित कर रहे हैं। अभी पिछले दिनों जब भारत के माननीय यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अपनी यात्रा के दौरान ग्याना पहुंचे तो उन्होंने ग्याना में स्थित आर्य समाज के केंद्र का भी दौरा किया। इस अवसर माननीय प्रधान मंत्री जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी को स्मरण किया। इस अवसर विभिन्न रंगों और तिरंगे के रंगों से सजे धजे बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति से प्रधानमंत्री जी का मन मोह लिया। सभी आर्यजन भारत के प्रधानमंत्री श्री मोदी जी को अपने बीच पाकर बहुत प्रसन्न थे, सभी आर्यजन और बच्चों ने प्रधानमंत्री जी को शुभकामनाएं दी।

आर्यवीर-वीरांगना दल के बेटे-बेटियों के मुख से आर्यसमाज का गीत सुनकर हुए मन्त्र-मुग्ध

ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में संस्कृति मन्त्रालय के विशेष सहयोग से

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर
स्मृति डाक टिकट लोकार्पण समारोह
एवं
आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष के कार्यक्रमों का शुभारम्भ

रविवार
15 दिसम्बर, 2024

द्वारा :- श्री राजनाथ सिंह जी माननीय रक्षामन्त्री (भारत)
स्थान : भारत मंडपम, प्रगति मैदान, नई दिल्ली

समारोह का शुभारम्भ
ठीक प्रात: 9:30 बजे

विशेष अनुरोध
समस्त आर्यसमाजों, प्रान्तीय सभाओं, आर्य संगठनों के अधिकारी एवं सदस्यगण दलबल सहित अधिकाधिक संख्या में प्रात: 9:20 बजे तक अवश्य ही पहुंचकर अपना स्थान ग्रहण कर लें

निवेदक :-
★ ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति
★ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
★ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ★ आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

देववाणी-संस्कृत

प्रभो! तू हमारे हृदय-मन्दिर में रम जा, बस जा

वेद-स्वाध्याय

सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा। मर्यइव स्व ओक्ये।।

-ऋ॰ 1।91।13

ऋषिः-**राहूगणो गोतमः**।। देवता-**सोमः**।। छन्दः-**गायत्री**।।

शब्दार्थ-गावः न यवसेषु = जैसे गौएँ जौ के खेत में आकर रमण करती हैं, आनन्दित होती हैं और **मर्यः स्व ओक्ये इव** =जैसे मनुष्य अपने निजी घर में बसता है, वैसे ही **सोम** = हे सोम्यस्वरूप प्रभो! **त्वम्** = आप **नः हृदि** = हमारे हृदय में **आ** = आकर **रारन्धि** = सदा रमण करो व बस जाओ।

विनय- हे देव! तुम मेरे हृदय में आ विराजो, इसी में रमण करो। कहने को तो पहले बहुत बार ऐसी प्रार्थना मैंने की है तथा औरों को करते सुना है, परन्तु शायद तब मैं न तो अपने हृदय को जानता था और न तुम्हें जानता था। तुम तो मुझमें तभी विराज सकते हो जब मेरा हृदय स्वार्थ से बिल्कुमल शून्य हो, सर्वथा निर्मल हो। इसीलिए अब मैंने अपने जीवन के लिए भागीरथ-यत्न से हृदय को पवित्र किया है। मैंने झूठ, हिसा, कुटिलता, असंयम आदि विकारों के मैल को ही नहीं निकाला है अपितु बड़े यत्न से क्षण-क्षण आत्मनिरीक्षण करते हुए राग और द्वेष के सूक्ष्मातिसूक्ष्म मल को भी खुरच-खुरचकर निकाला है और अतएव अब इसमें भक्ति-स्रोत भी खुल गया है, इसीलिए मैं अब तुम्हें बुलाने की हिम्मत करता हूँ। हे मेरे जीवनसार! मैं कहता हूँ कि तुम मेरे हृदय में ऐसे आ जाओ जैसे गौवें जौ के हरे खेत में प्रसन्नता से आकर खाने का आनन्द लेती हैं, क्योंकि मैंने भी न केवल अपने हृदय को तुम्हारे योग्य स्वच्छ बनाया है, किन्तु इसमें भक्ति का रस भी जुटा रखा है। मेरे इस हार्दिक प्रेम का रसास्वादन करने के लिए तुम यहाँ आओ। मेरा प्रेम देखता है कि अब तुम ही मेरे प्राणों के प्राण हो, तुम्हारा हट जाना मेरी मौत है। इसलिए मेरा हृदय पुकारता है, कि तुम मुझमें आकर सदा रमण करो। क्या मेरा सच्चा ज्ञानमय प्रेम तुम्हें यहाँ नहीं खींच लाएगा? नहीं, मैं भूल करता हूँ, तुम मेरे हृदय में न केवल आओ किन्तु आकर इस तरह बस जाओ जैसे मनुष्य अपने घर में रहता है व रमण करता है। मेरी भक्ति आर्त्त, जिज्ञासु व अर्थार्थी की भक्ति नहीं है, क्योंकि मैंने अपने हृदय से अब 'अहंकार' को भी सर्वथा निकाल दिया है। अब यह शरीर तेरा है, यह हृदय अब तेरा अपना घर है। 'मैं' - 'मम' सब यहाँ से लोप हो गया है। हे आत्मा-की-आत्मा सोम! सर्वथा विशुद्ध इस हृदय में आप यथेच्छ रमण करो, अब यह तुम्हारा घर हो गया है।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

सम्भल विवाद : क्या और क्यों?

सम्भल बवाल हिंसा आगजनी के बीच सवाल?

.....दरअसल पिछले दिनों संभल की जामा मस्जिद को हरिहर मंदिर बताते हुए दाखिल वाद के आधार पर सर्वे के लिए जब सात बजे कोर्ट कमिश्नर की टीम पहुंची तो संभल में बवाल हो गया। अचानक टीम के पहुंचने की सूचना पर जुटी भीड़ मस्जिद में दाखिल होने की कोशिश करने लगी। रोकने पर पुलिस पर पथराव कर दिया। हिंसक हुई भीड़ ने चंदौसी के सीओ की गाड़ी समेत कई वाहनों में तोड़फोड़ कर दी और आग लगा दी। इसी बीच फायरिंग भी शुरू हो गई । पुलिस ने आंसू गैस के गोले और लाठीचार्ज कर भीड़ को खदेड़ा। बवाल में घिरकर पांच लोगों की मौत हो गई । क्रोध की इस आग में पुलिस अधिकारी घायल हुए, कई मौतें और दंगों के बाद आम जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया, लेकिन जिस मस्जिद को लेकर इतना बवाल हुआ है.....

उत्तर प्रदेश का संभल जल रहा है और विवाद के केंद्र में है एक मस्जिद। मुरादाबाद के संभल में 16वीं शताब्दी की जामा मस्जिद के सर्वे का आदेश जैसे आया, वहां के स्थानीय लोगों के अंदर क्रोध की ज्वाला जल उठी। इसके बाद जो हुआ वह हर अखबार, मीडिया चैनलों की सुर्खियां बन गया।

दरअसल पिछले दिनों संभल की जामा मस्जिद को हरिहर मंदिर बताते हुए दाखिल वाद के आधार पर सर्वे के लिए जब सात बजे कोर्ट कमिश्नर की टीम पहुंची तो संभल में बवाल हो गया। अचानक टीम के पहुंचने की सूचना पर जुटी भीड़ मस्जिद में दाखिल होने की कोशिश करने लगी। रोकने पर पुलिस पर पथराव कर दिया। हिंसक हुई भीड़ ने चंदौसी के सीओ की गाड़ी समेत कई वाहनों में तोड़फोड़ कर दी और आग लगा दी। इसी बीच फायरिंग भी शुरू हो गई । पुलिस ने आंसू गैस के गोले और लाठीचार्ज कर भीड़ को खदेड़ा। बवाल में घिरकर पांच लोगों की मौत हो गई । क्रोध की इस आग में पुलिस अधिकारी घायल हुए, कई मौतें और दंगों के बाद आम जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया, लेकिन जिस मस्जिद को लेकर इतना बवाल हुआ है, उसका इतिहास क्या है?

यूरोप से लेकर अरब या एशिया, न जाने आज कितने ऐसे स्थल हैं जिनके प्रमाण हैं कि यह अन्य मतों के धार्मिक या सांस्कृतिक स्थलों को तोड़कर मस्जिदें बनाई गईं। तुर्की की मस्जिद हगिया सोफिया चर्च बनी, स्पेन के करीब सात सौ चर्च तोड़कर मस्जिदें बनी। पाकिस्तान में आज भी न जाने कितने जैन मंदिर, गुरुद्वारे, हिंदू मंदिर तोड़े गए, इनकी गिनती भी नहीं की जा सकती।

ठीक ऐसा ही विवाद संभल में देखने को मिला, लेकिन यह कोई नया नवेला विवाद नहीं है। असल में सच्चाई से पर्दा तो दशकों पहले उठना आरंभ हो गया था, जब 1940 में किताब प्रकाशित हुई "द रिलीजियस पॉलिसी ऑफ मुगल एम्परर्स"। हिंदी में कहें तो "मुग़ल सम्राटों की धार्मिक नीति"। इस पुस्तक में भारत में मुगल राज्य की प्रकृति का अलग-अलग तरीके से वर्णन किया गया था। प्रो॰ श्री राम शर्मा जी ने, जो कई वर्षों तक पंजाब, बॉम्बे और पूना विश्वविद्यालयों में इतिहास, राजनीति विज्ञान और लोक प्रशासन के प्रोफेसर रहे, भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग के सदस्य और रॉयल हिस्टोरिकल सोसाइटी के फेलो थे, और चंडीगढ़ के लोक प्रशासन संस्थान के निदेशक और डीएवी कॉलेज के प्रिंसिपल भी थे। उनकी "द रिलीजियस पॉलिसी ऑफ मुगल एम्परर्स" कई खंडों में अलग-अलग वर्षों में प्रकाशित हुई ।

इसी से निकलकर आया संभल की शाही मस्जिद का इतिहास, क्योंकि पृथ्वी राज चौहान के दिल्ली जाने के बाद उस ज़माने में आल्हा और उदल दोनों भाई यहाँ के प्रमुख रक्षक थे। कहते हैं कि उदल ने एक ही छलांग में एक दीवार पर चक्की का एक पार्ट टांग दिया था। आल्हा और उदल के बारे में आज की पीढ़ी भले ही परिचित न हो, लेकिन इनके शौर्य की गाथा आज भी हिंदी भाषी इलाकों के ग्रामीण क्षेत्रों में गाई जाती है। बाद में मध्यकाल आया, सम्भल का सामरिक महत्त्व बढ़ गया, क्योंकि यह आगरा व दिल्ली के नजदीक है। बाबर के आते-आते सम्भल की जागीर अफगान सरदारों के हाथ में थी। बाबर ने हुमायूँ को सम्भल की जागीर दी, लेकिन वहाँ वह बीमार हो गया, उसे आगरा लाया गया। इस प्रकार बाबर के बाद हुमायूँ ने साम्राज्य को भाइयों में बाँट दिया और सम्भल मिला बाबर के सबसे छोटे और चौथे नंबर के बेटे अस्करी को।

लेकिन शेरशाह सूरी ने अस्करी को खदेड़ दिया और अपने दामाद मुबारिज़ ख़ाँ को सम्भल की जागीर थमा दी। बाद में सम्भल को फिर से जीता गया, हुमायूँ को सम्भल का गवर्नर बना दिया गया और हुमायूँ ने अपने बेटे अकबर को शासन सौंप दिया। लेकिन बाबर के शासनकाल के दौरान ही हरिहर मंदिर, जो वहाँ हिन्दुओं की श्रद्धा का केंद्र था, 1529 में बाबर ने मंदिर को मस्जिद में बदल दिया था, नाम दिया शाही जामा मस्जिद।

बाबर के आदेश पर इसका जिम्मा सौंपा गया मीर बाकी को, वह मुगल सेनापति और बाबर तथा हुमायूँ दोनों की सेवा करने वाले एक भरोसेमंद दरबारी सदस्य था। उसने ही बाबर के आदेश पर मंदिर तोड़कर मस्जिद का काम अपने हाथ में लिया था और मंदिर को नष्ट कर दिया। बाद में इसे कई शासकों द्वारा वर्षों से मरम्मत और सुधारा गया है। दक्षिणी विंग में एक शिलालेख में लिखा है, कि रुस्तम खान दकानी ने 1657 में मस्जिद की मरम्मत की थी। उत्तरी विंग में एक समान पट्टिका 1626 में सैय्यद कुतुब द्वारा बनवाई गई थी। केंद्रीय कक्ष के बाहरी और आंतरिक मेहराबों के बारे में दो शिलालेख शहर और जिले के मुसलमानों द्वारा 1845 के आसपास किए गए जीर्णोद्धार को दर्ज करते हैं।

साल 1940 में और इसके बाद भी श्री राम शर्मा उन विद्वानों में से एक हैं जिन्होंने अपनी पुस्तक "द रिलीजियस पॉलिसी ऑफ मुगल एम्परर्स" (1963 ई॰) में बाबर के खिलाफ आरोप लगाए, तथा मंदिर तोड़कर मस्जिद बनाने की बात सामने लेकर आए। पुस्तक "द रिलीजियस पॉलिसी ऑफ मुगल एम्परर्स" में इसका इतिहास और मुगलों की तोड़फोड़ सब सामने रख दी। श्री राम शर्मा जी ने भारतीय अभिलेखागार से सबूत जुटाए और सच्चा को पन्नों पर उकेरा। उन्होंने "आइन-ए-अकबरी" में दर्ज संभल में विष्णु के एक प्रसिद्ध मंदिर के उल्लेख का सबूत दिया और पूछा, आखिर वो मंदिर कहां गया? यह संदर्भ इस तर्क के समर्थन में दिया गया है, कि हरि मंदिर तब तक अस्तित्व में था, बाद में कहां गया?

विवाद तब शुरू हुआ जब वकील विष्णु शंकर जैन और अन्य लोगों ने संभल में एक याचिका दायर की। ज्ञानवापी मस्जिद और कृष्ण जन्मभूमि विवादों में शामिल होने के लिए जाने-जाने वाले जैन ने दावा किया कि जामा मस्जिद भगवान कल्कि को समर्पित एक मंदिर के खंडहरों पर बनाई गई थी। याचिका में आरोप लगाया गया है कि 1526-27 में बाबर के आक्रमण के दौरान मंदिर को नष्ट करने के बाद मस्जिद का निर्माण किया गया था। याचिका कर्ताओं का तर्क है कि बाबरनामा और अकबरनामा जैसे ऐतिहासिक ग्रंथ बाबर की ओर से मंदिर के विनाश का दस्तावेजीकरण करते हैं।

दलील में दावा किया गया है कि मंदिर का निर्माण ब्रह्मांड की शुरुआत में हिंदू पौराणिक व्यक्ति विश्वकर्मा ने किया था। आरोप है कि बाबर की सेना ने मंदिर को आंशिक रूप से नष्ट कर दिया और इस्लामिक वर्चस्व स्थापित करने के लिए इसे मस्जिद में बदल दिया।

- शेष पृष्ठ 7 पर

18 से 20 अक्टूबर 2024
परोपकारिणी सभा, अजमेर

3 दिवसीय ऋषि मेले में आर्य नेताओं, विद्वानों और संन्यासियों के प्रेरक उदबोधन

ऋषि मेले के अवसर पर गुजरात के राज्यपाल आदरणीय आचार्य देवव्रत जी ने उद्घाटन सत्र में कहा कि वेद ज्ञान से ही मानव की सर्वांगीण उन्नति सम्भव है। अंधविश्वास-कुप्रथा मुक्त वेदज्ञान व वैदिक संस्कृति का विस्तार सम्पूर्ण विश्व में हो, यही महर्षि दयानन्द की इच्छा थी। देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराने में महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी विचारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री और अजमेर के सांसद भागीरथ चौधरी इस सत्र में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द ने गुलामी के अंधेरे में देश को जगाने का काम किया। ऋषि दयानन्द ने छुआछूत, अंधविश्वास, कुप्रथाओं पर प्रहार कर नारी शिक्षा व सर्वजन शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया।

राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि हम आर्य-श्रेष्ठ बनकर विश्व को भी आर्य (श्रेष्ठ) बनाएं, ऋषियों की कल्याणकारी शिक्षा ही से समाज सुधार व सामाजिक उत्थान होगा, जोकि महर्षि दयानन्द के विचारों से ही सम्भव है।

मुख्य अतिथि राज्यसभा सदस्य घनश्याम तिवाड़ी ने कहा कि राष्ट्रीय चेतना, वैदिक संस्कृति, नारी उत्थान के लिए आन्दोलन, विधवा विवाह का समर्थन और वेदों का हिन्दी रूपान्तरण कर वेदों को आमजन तक पहुंचाने का कार्य महर्षि दयानन्द ने किया। चाहे 1857 की क्रान्ति हो अथवा स्वतन्त्रता संग्राम की ज्योति प्रज्वलित करना हो, इन सभी कार्यों में महर्षि दयानन्द की अग्रणी भूमिका थी।

प्रो. नरेश कुमार धीमान ने कहा कि महर्षि दयानंद ने भारत की दुर्दशा को देखा और उसके प्रत्येक पक्ष पर विचार किया। उनका विचार मात्र धार्मिक नहीं, आत्म प्रतिष्ठा के लिए भी नहीं था, अपितु हर जाति व समूह की सामूहिक उन्नति और भारत की प्राचीनतम वैदिक संस्कृति के उत्थान और समन्वय के लिए था।

आचार्य रूपचंद्र 'दीपक' ने कहा कि प्राचीन काल में रामायण-महाभारत से पहले सब लोग वेद पढ़ते थे, वेदों के आधार पर ग्राम सभाएं होती थी, विवाह होते थे। सत्य का जो वर्णन है वेदों में है, कहीं और नहीं है। वेद सन्मार्ग पर चलने व शान्ति का सन्देश देता है। यदि हम सभी वापस वेदों की ओर लौटेंगे तो संसार सुन्दर हो जाएगा।

डॉ. महावीर मीमांसक ने कहा कि हमें इस बात पर गर्व करना चाहिए की महर्षि दयानंद ने वेदों में विज्ञान की घोषणा की। वेद विज्ञान को मानता है, यह महर्षि दयानंद ने अपने वेद भाष्य में लिखकर बताया और विज्ञान से तात्पर्य है कि सब कुछ तर्क पूर्ण है।

डॉ. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि जहां संगठन नहीं होगा वहां समाज बिखर जाएगा, इसलिए हम सभी को एकत्रित और संगठित होने की आवश्यकता है। वेद कहता है की संसार में मनुष्य एक दूसरे की रक्षा करें और मनुष्य को सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

वैदिक विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी ने ऋषि दयानन्द के उपकारों की चर्चा करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार सार्वभौमिक हैं। उनके विचार आज भी उतने प्रासंगिक हैं जितने उस समय थे। नारी शिक्षा को महत्त्व, विधवा विवाह को मान्यता, अछूतों से घृणा समाप्ति, मानवमात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है, ये सब ऋषि दयानन्द की शिक्षाओं का ही परिणाम है।

संयोजक डॉ. जगदेव ने कहा कि धर्म राजनीति से अलग नहीं आजकल "धर्म को राजनीति से अलग रखें" ऐसा कहना प्रगतिशीलता का सूचक माना जाता है, जो सिर्फ पोंगा पण्डितों के लिए ही ठीक है। वेदानुसार वैदिक धर्म और राजनीति साथ-साथ चलते हैं।

डॉ. प्रो. रामचन्द्र ने कहा कि उन्नीसवी सदी में महर्षि दयानन्द प्रथम ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने मानव प्रगति व सुख के बाधक अंधविश्वास को दूर कर सुपथ दिखाया। सामाजिक सार्थक व्यवस्था के लिए राजनीति का शुद्ध होना अनिवार्य है और राजनीति में धर्म भी अनिवार्य रूप से जुड़ा रहे।

महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास के प्रधान डॉ. श्रीगोपाल बाहेती ने कहा कि वेदों में सर्वजन हितकारी धर्मयुक्त राजनीति के सूत्र हैं जिसकी व्याख्या महर्षि दयानन्द ने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के छठे समुल्लास में की है। उत्तम धार्मिक चरित्र ही सुखसाधक होता है जो राजनेता पर भी लागू होता है। महर्षि दयानन्द ने अपने शिष्य उदयपुर के महाराणा सज्जन सिंह को पत्र में लिखा था कि राजा का चरित्र उत्तम, धार्मिक होना चाहिए। श्रेष्ठ राष्ट्र व समाज का निर्माण श्रेष्ठ राजनेता ही करता है। भ्रष्ट राजनेता राष्ट्र, समाज को भी भ्रष्ट कर देता है।

भाजपा, तेलंगाना प्रान्त के संगठन महामन्त्री चन्द्रशेखर ने कहा कि यह ऋषि मेला भारत को धार्मिक बनाने की दिशा देगा। आपने कहा कि देश को स्वतन्त्र बनाने के लिए प्रथम नेतृत्व महर्षि दयानन्द ने ही प्रदान किया था। रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार भगतसिंह, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द आदि स्वतन्त्रता सेनानियों के प्रेरक महर्षि दयानन्द ही थे।

आचार्य जीववर्धन शास्त्री ने कहा कि स्वामी दयानन्द व उनके शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने सर्व प्रथम शुद्धि आन्दोलन चलाकर देश को विधर्मी होने से बचाया। आपने कहा कि धर्म के आधार पर देश का विभाजन होने के बाद भी प्रथम और अन्य छह भारत के शिक्षामन्त्री मुस्लिम बनाए गए जिन्होंने साम्यवादियों से देश का झूठा इतिहास लिखवाया। जीववर्धन शास्त्री ने कहा कि यदि महर्षि दयानन्द के शिष्य राजनीति में आए होते तो कुटिल अंग्रेजों व मिशनरियों द्वारा गढ़ा गया झूठ कि 'आर्य विदेशी आक्रमणकारी थे' स्कूलों में नहीं पढ़ाया जाता। आर्य इसी देश भारत के मूल निवासी हैं।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि महर्षि दयानन्द का राजनीतिक चिन्तन गम्भीर एवं व्यापक है। अपने ग्रन्थों और वेदभाष्य में महर्षि ने प्राय: सभी उपयोगी विषयों पर अपना परिवर्तनकारी चिन्तन प्रस्तुत किया है (किन्तु अध्यात्म, राजनीति और विज्ञान पर उन्होंने अधिक बल दिया है।

हरियाणा सूचना आयुक्त कुलवीर छिकारा ने कहा कि अनेक ऋषि हुए हैं, महर्षि हुए हैं, लेकिन समाज सुधारक महर्षि दयानन्द ही हुए हैं। उनका चिंतन, उनके सिद्धांत, इस मायने में विशेष रूप से मुझे अपील करते हैं कि उनकी सोच साधारण दिखते हुए, भी बहुत असाधारण थी। उन्होंने कहा- हम सब ईश्वर की संतान हैं और जन्म के आधार पर कोई छोटा या कोई बड़ा होता ही नहीं है। स्वतंत्रता के प्रथम उद्घोषक के रूप में स्वदेशी की धारणा को जितने प्रबल और प्रखर रूप से उन्होंने स्थापित किया इतना किसी और ने नहीं किया।

पूर्व मंत्री श्रीमती अनिता भदेल ने कहा कि आर्य समाज और ऋषि दयानंद की शिक्षाओं के बारे में तो हम सब बखूबी जानते हैं कि देश के स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का कितना बड़ा योगदान रहा है। एक महिला होने के नाते से जब मंच पर खड़ी होकर के बोलने का जब मुझे अवसर मिलता है तो मैं ऋषि दयानंद को याद किए बगैर नहीं रहती, क्योंकि महिलाओं को समानता और सम्मान का दर्जा दिलाने का काम यदि किसी ने अपने हाथों में लिया तो वे दयानंद सरस्वती जी थे।

राज्यपाल श्री हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि देश में व्याप्त रुढ़ियों कुरीतियों के विरुद्ध सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने ही शंखनाद किया था और अंधविश्वास तथा छुआछूत पर प्रहार किया था। प्रखर राष्ट्रभक्त ऋषि दयानन्द ने कहा था कि कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वही सर्वोत्तम होता है। ऋषि दयानन्द ने हमें स्वदेश, स्वभाषा, स्व-धर्म व स्व-संस्कृति पर गर्व करना सिखाया। सावरकर जी ने भी कहा था कि स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक ऋषि दयानन्द ही थे। राज्यपाल महोदय ने कहा कि सुभाषचन्द्र बोस ने महर्षि दयानन्द को आधुनिक भारत का निर्माता बताया है।

प्रधान श्री ओम मुनि जी ने सभी वक्ताओं एवं अतिथि महानुभावों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया।

- कन्हैया लाल आर्य, मन्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर

दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता

कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

1 पुरस्कार : 1 लाख, 2 पुरस्कार : 51 हजार, 3 पुरस्कार : 31 हजार,
4 पुरस्कार : 51 सौ, पुरस्कार : 2100 नकद, छठा पुरस्कार : 1000 नकद,
सातवां पुरस्कार : 500/- रुपये नकद

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

प्रथम पृष्ठ का शेष

प्रणवानन्द सरस्वती, गुरुकुल गौतमनगर, आचार्या सुमेधा शास्त्री, अधिष्ठात्री कन्या गुरूकुल चोटीपुरा, श्रीमती हर्षिता सिंह, जिला पंचायत अध्यक्षा आदि द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में महामहिम राज्यपाल ने विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की असाधारण दिव्य चेतना उसी समय परिलक्षित होने लगी थी जब वह दीन-दुखियों, अछूतों के प्रति मुखर होकर कुरीतियों का विरोध करने लगे थे जो उनके जीवन पर्यन्त चलता रहा। महर्षि के विषय में राजा भर्तृहरि का यह नीति वचन उचित ही है-

निन्दन्तु नीति निपुणा यदि वास्तुवन्तु,
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्ठम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्यायात्
पथ: प्रविचलन्ति पदम् न धीरा:।।

भारत की दुर्दशा व अवनति के कारणों को जानने के लिए हमें महर्षि दयानन्द को पढ़ना पड़ेगा। जो भारत कभी अपने ज्ञान के कारण जाना जाता था। वह अपने अस्तित्व के लिए लड़ता रहा। नारी सशक्तिकरण के लिए महर्षि ने उन्हें शिक्षित करने का आदेश दिया। आधुनिक भारत के निर्माताओं की सूची में महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम शीर्ष पर है जो देश की स्वतंत्रता से लेकर संस्कृति संस्कार की रक्षा तक मुखर रहे।

राज्यपाल महोदय का स्वागत करते हुए विशिष्ट अतिथि के रूप में माननीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री जयवीर सिंह जी ने कहा- नारी शिक्षा, सम्मान व समानता का श्रेय महर्षि दयानन्द को जाता है। उन्हीं के पगचिन्हों पर वर्तमान सरकार चल रही है।

- शेष पृष्ठ 6 पर

दीप प्रज्ज्वलित करके विराट आर्य महाकुम्भ का शुभारम्भ करते सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य, संस्कृति मन्त्री श्री जयवीर सिंह, उ. प. सभा के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा एवं अन्य

माननीय पर्यटन एवं संस्कृति मन्त्री श्री जयवीर सिंह जी को परिवर्तन पुस्तक भेंट करते श्री विनय आर्य एवं सांस्कृतिक प्रस्तुति एवं शोभायात्रा का दृश्य

विराट आर्य महाकुम्भ में उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान, श्री विनय आर्य, देवेन्द्र पाल वर्मा तथा संस्कृति मन्त्री श्री जयवीर सिंह

भारत के परिवर्तन की नींव रखने वाले ☆ महर्षि दयानन्द के अमर वाक्य ☆

महर्षि दयानंद सरस्वती जी का जन्म और जीवन संपूर्ण मानव जाति के उत्थान और कल्याण के लिए समर्पित रहा है। भारत की दुर्दशा और दीन दुखियों की पीड़ा को निकट से देखकर उन्होंने अनुभव किया कि पुण्यभूमि भारत को उसकी विरासत प्रदान करने और विश्वगुरु बनाने के लिए एक नए परिवर्तन की अत्यंत आवश्यकता है। इसके लिए महर्षि ने संपूर्ण विपरीत परिस्थितियों में अखण्ड तप, त्याग, स्वाध्याय और साधना करते हुए मां भारती की आजादी से लेकर मानवजाति के ऊपर अनेकानेक उपकार किए, इसके लिए महर्षि ने अनथक साधना करते हुए, वेदों को आधार बनाकर निरंतर भाषण, प्रवचन और प्रश्नोंत्तर के माध्यम से समाज में जागृति का शंखनाद किया और अपनी लेखनी से सत्यार्थ प्रकाश सहित महत्वपूर्ण ग्रंथो की रचना करके मानव मात्र को कल्याण का रास्ता दिखाया। उस अज्ञान, अविद्या और अंधकार के समय महर्षि की प्रेरणा से जागृति की लहर उत्पन्न हो गई थी। आधुनिक परिवेश में युवा पीढ़ी संस्कृत निष्ठ महर्षि के ग्रंथो को, उनकी जन कल्याणकारी शिक्षाओं को एक सीमा तक पढ़ने और समझने में कम ही सक्षम है, अत: महर्षि दयानंद के ग्रंथो से संकलित उनके अमर वाक्य जो हर आयु वर्ग के लिए उपयोगी और अमृत तुल्य हैं।

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक "भारत के परिवर्तन क्रांति की नींव रखने वाले महर्षि के अमर वाक्य" जन-जन तक पहुंचाने के लिए यहां एक नियमित कॉलम प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसमें आप उनकी शिक्षाओं को पढ़कर अवश्य लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है।
पुस्तक प्राप्त करने के लिए 9540040339 से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक सम्पन्न :

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के विभिन्न कार्यक्रमों पर हुई चर्चा

अधिकतम संख्या दिवस ★ महा सम्पर्क अभियान ★ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 सहित होंगे विभिन्न आयोजन

दिल्ली में सभा एवं विभिन्न सहयोगी संगठनों की ओर से होने वाले आयोजनों का कार्यक्रम कैलेण्डर-2025 हुआ निर्धारित

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के 2 वर्षीय आयोजन 12 दिसंबर 2023 से लगातार गतिशील हैं। इस लंबी अवधि में आर्य समाज ने एक से बढ़कर एक भव्य, विशाल और विराट कार्यक्रम सफलता पूर्वक संपन्न किए हैं। इस क्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा लगातार निरंतरता बरतते हुए आगामी योजनाओं को लेकर 24 नवंबर 2024 को अंतरंग सभा की बैठक आर्य समाज हनुमान रोड के सभागार में संपन्न हुई।

सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी की अध्यक्षता में समस्त कार्यकारणी के सदस्य, अधिकारी दिल्ली की आर्य समाजों के प्रधान, मंत्री, आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान, मंत्री, सभी वेद प्रचार मंडलों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उपस्थित रहे। इस अवसर पर गायत्री मंत्र और ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्रों का पाठ करके बैठक का आरंभ हुआ। सर्वप्रथम गत दिनों दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए और गत बैठक से लेकर अब तक संपन्न समस्त कार्यक्रमों की सफलता और समीक्षा को मंत्री श्री सुखवीर सिंह आर्य जी ने पढ़कर सुनाया। सभी सभासदों ने ओम ध्वनि के साथ हाथ उठाकर इसकी पुष्टि की। 2 अक्टूबर को ग्रेटर कैलाश पार्ट-1 में संपन्न हुई, एकदिवसीय पूर्णकालिक संगोष्ठी को लेकर एक विशेष चर्चा हुई, जिसकी वीडियो भी दिखाई गई, आर्य प्रतिभा विकास संस्थान और आर्य प्रगति स्कॉलरशिप के विषय में भी विचार विमर्श किया गया और गत दिनों 17 नवंबर 2024 को डिफेंस कॉलोनी में आर्य प्रगति छात्रवृत्ति वितरण के विषय में भी बताया गया कि आर्य समाज की यह विशेष योजना लगातार आगे बढ़ रही है, जिससे भारत का भविष्य मजबूत हो रहा है, इसकी सभी सभासदों ने प्रशंसा की और पुष्टि की। आर्य समाज का 150वां स्थापना वर्ष को लेकर सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने कहा कि इस अवसर

पर 5 अप्रैल 2025 को संपर्क अभियान का विशेष शुभारंभ होगा और अधिकतम संख्या दिवस का आयोजन सभी आर्य समाजों में किया जाएगा। इसके उपरांत 150वें स्थापना वर्ष को लेकर अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन अक्टूबर 2025 के आसपास किया जाएगा, जिसकी तिथियां समय आने पर सुनिश्चित की जाएंगी। यह आयोजन अपने आप में एक नया आयोजन होगा, इसमें आर्य समाज आयोजक होगा और सभी आर्य समाजों से जुड़ी संस्थाएं, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, विद्यालय और अन्य शिक्षण संस्थानों सहित जितने भी लोग हमारे साथ किसी भी माध्यम से जुड़े हुए हैं या जिनको हम संपर्क करके आर्य समाज से परिचित करेंगे, वे सब लोग इस कार्यक्रम को देखेंगे और जानेंगे कि आर्य समाज क्या है? आर्य समाज के सिद्धान्त क्या है, आर्य समाज का इतिहास और भविष्य की योजनाए क्या हैं? इस अंतर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन के लिए स्थान, क्षेत्रफल और क्षेत्र सुनिश्चित करने पर भी विचार विमर्श किया गया, लेकिन यह कार्यक्रम कहां पर होगा और कितना स्थान इसके लिए आवश्यक होगा, इन सब विषयों को भविष्य में विचार करने के लिए निर्णय लिया गया। सभा महामंत्री ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जो जय-जय कॉलोनियों में लगातार प्रचार-प्रसार और आर्य समाज के विस्तार को गति दी जा रही है, उसके विषय में भी सबको परिचित कराया, सभी ने इन सेवा कार्यों के प्रति प्रशंसा की और अपनी सहमति जताई।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर स्मृति डाक टिकट का लोकार्पण समारोह 'भारत मंडपम' प्रगति मैदान नई दिल्ली में 15 दिसंबर 2024 को आयोजित किया जाएगा। जिसका लोकार्पण भारत के यशस्वी रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह अपने कर-कमलों से करेंगे, इसकी घोषणा की गई और दिल्ली की समस्त आर्य संस्थाएं, वेद प्रचार मंडलों, शिक्षण संस्थान और सभी आर्य प्रतिष्ठानों से अनुरोध किया गया है कि आप सभी भारी संख्या में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें, कार्यक्रम का समय 10:00 बजे पहुंचने का सुनिश्चित किया गया, जिसके लिए सभी ने ओमध्वनि के साथ सहमति प्रस्तुत की। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर 200 लोगों तक पहुंचने के जनसंपर्क महा अभियान के लिए प्रेरित किया गया और सभी को अपने क्षेत्र में वरिष्ठ और विशिष्ट लोगों से संपर्क करने के लिए अनुरोध किया गया। जिससे एक लहर समाज में व्यापक हो, शोभायात्राओं का आयोजन किया जाए, अपने समाजों में आर्य समाज के प्रचारकों-संवर्धकों की नियुक्ति की जाए, नए लोगों को जोड़ना है, अपने परिवारों से, बच्चों से, सभी से संपर्क करना है, आदि विषयों पर सभी ने सहमति जताई और विश्वास दिलाया कि आने वाले समय में पूरा आर्य समाज बढ़-चढ़कर इन कार्यों को पूरी तन्मयता से करेगा। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने उपस्थित सभी अधिकारियों का धन्यवाद किया। शांतिपाठ के साथ बैठक संपन्न हुई और सभी लोग जलपान के बाद अपने गंतव्य की और प्रस्थान कर गए। - *मन्त्री*

अन्तरंग सभा में पारित प्रस्ताव एवं निर्णय

★ 150वें स्थापना वर्ष पर दिल्ली की आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थानों को किया जाएगा सुसज्जित

★ आर्यसमाज के भवनों को रंग-रोगन करवाकर, बोर्ड लगाकर, लाइटिनिंग से सजाया जाएगा

★ 200वें वर्ष पर दिल्ली आर्यसमाज करेगा 200 पुस्तकों का प्रकाशन

★ आर्यजनों, आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं से कम से कम 1 पुस्तक प्रकाशित करने का आह्वान

★ दिल्ली में आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष पर होंगे वृहद आयोजन

★ 2025 में आयोजनों के लिए दिल्ली आयोजन समिति का गठन

★ आर्यसमाज स्थापना दिवस से पहले रविवार को दिल्ली की सभी आर्यसमाजें करें अधिकतम संख्या दिवस का कार्यक्रम

★ 2025 के वृहद् आयोजनों को दृष्टिगत रखते हुए अपने-अपने क्षेत्रों में संचालित करें महासम्पर्क अभियान

★ 28 दिसम्बर से 2 जनवरी, 2025 तक पुदुचेरी में होगा पूर्ण सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर का आयोजन

★ सभा द्वारा प्रकाशित कैलेण्डर 2025 का हुआ लोकार्पण

★ सभा के मासिक दानी बनने और सहयोग का संकल्प लेने वाले अधिकारियों, सदस्यों एवं आर्यजनों का किया गया आभार

★ भारत मंडपम में 15 दिसम्बर, 2024 को रक्षामन्त्री श्री राजनाथ सिंह जी के कर-कमलों से होगा 200वें वर्ष पर जारी विशेष स्मृति डाक टिकट का लोकार्पण

★ लोकार्पण समारोह ठीक 9:30 बजे आरम्भ होगा - सभी आर्यजन समय से पूर्व पहुंचकर बनें ऐतिहासिक कार्यक्रम के साक्षी

★ माननीय रक्षामन्त्री जी भारत मंडपम में करेंगे 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के प्रतीक चिह्न (लोगो) का अनावरण

सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी के आवास पर हुआ

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मना परिवार की 5वीं पीढ़ी के सदस्यों का स्वागत

गत दिनों महर्षि दयानंद जी के जन्मना परिवार की 5वीं पीढ़ी के सदस्य, श्री पार्थ रावल जी सपरिवार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य जी के निवास स्थान पर पधारे। श्री धर्मपाल आर्य जी एवं धर्मपत्नी वीना आर्य जी ने उनका स्वागत किया। इस अवसर पर दिल्ली महामंत्री विनय आर्य जी उपस्थित रहे। उनसे भेंट करके मन में बहुत प्रसन्नता हुई और वे भी संकल्पबद्ध दिखे आर्य समाज के कार्यों को लेकर। टंकारा कार्यक्रम के बाद उनके मन में यह संकल्प और मजबूत हुआ है। - महामन्त्री

साप्ताहिक स्वाध्याय

आर्यसमाज का विस्तार

गतांक से आगे-

सब चुपचाप एकाग्र होकर व्याख्यान सुन रहे थे। मुझे पूरा व्याख्यान तो याद नहीं, यद्यपि उसके असर का अब तक अनुभव करता हूं, किन्तु कुछेक शब्द मुझे मरते दम तक याद रहेंगे। महर्षि ने कहा- लोग कहते हैं कि सत्य को प्रकट न करो। कलेक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे चक्रवर्ती राजा क्यों न अप्रसन्न हो, हम तो सत्य ही कहेंगे! इसके बाद उस उपनिषद्-वाक्य को पढ़कर जिसमें लिखा है कि आत्मा का न कोई हथियार छेदन कर सकता है, और न उसे आग जला सकती है; गर्जती हुई आवाज में बोले, यह शरीर तो अनित्य है। इसकी रक्षा में प्रवृत्त होकर अधर्म करना व्यर्थ है। इसे जिस मनुष्य का जी चाहे नष्ट कर दे। फिर चारों ओर अपनी तीक्ष्ण ज्योति डालकर सिंहनाद करते हुए फर्माया, लेकिन वह सूरमा वीर पुरुष मुझे दिखलाओ, जो यह दावा करता है कि वह मेरे आत्मा का नाश कर सकता है! जब तक ऐसा वीर इस संसार में दिखाई नहीं देता, मैं यह सोचने के लिए भी तैयार नहीं हूं कि मैं सत्य को दबाऊं या नहीं!' लम्बे उद्धरण के लिए पाठक क्षमा करें। यह महर्षि दयानन्द की व्याख्यान -शक्ति और निर्भयता का एक अच्छा दृष्टान्त है। जिन लोगों को महर्षि के व्याख्यान सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उन पर व्याख्यानों का बड़ा गहरा प्रभाव होता था। महर्षि की भाषण शक्ति स्वाभाविक थी, उसमें बनावट या यत्नपूर्वक भाषा-निर्माण का नाम नहीं था। जो कुछ था, हृदय का शब्द था, एक निर्भय आत्मा का उद्गार था। यही कारण था कि महर्षि का भाषण सदा नया, सदा मनोरंजक और सदा शिक्षाप्रद रहता था। महर्षि पूरी तरह निर्भय थे। उनके जीवन की घटनाएं निर्विवाद रीति से सिद्ध करती हैं कि किसी शारीरिक या मानसिक खतरे से घबराना उनके लिए असम्भव था। भय शब्द उनके शब्द-शास्त्र से निर्वासित हो गया था।

बरेली में महर्षि दयानन्द का पादरी स्कॉट से शास्त्रार्थ हुआ। शास्त्रार्थ बड़ी शान्ति से हुआ। जनता पर उत्तम प्रभाव पड़ा। शास्त्रार्थ में आप बड़ी स्पष्टवादिता से काम लेते थे, परन्तु कभी प्रस्तुत विषय, सभ्यता की सीमा और सत्य-प्रियता का साथ नहीं छोड़ते थे। प्रतिपक्षी के पक्ष को समझना, समझकर उसे ठीक रूप में प्रकट करना और युक्ति पूर्वक उत्तर देना, शास्त्रार्थ के ये स्वर्णिम नियम महर्षि दयानन्द को मान्य थे। केवल शब्दों से ही मान्य नहीं थे, व्यवहार में भी पूर्णत: मान्य थे।

बरेली के बाद कई मास तक संयुक्त प्रान्त का भ्रमण जारी रहा। शांहजहांपुर, लखनऊ, फर्रुखाबाद, कानपुर, इलाहाबाद और मेरठ आदि में महर्षि धर्म का प्रचार करते रहे। जहां आर्यसमाज नहीं बने थे, वहां उनकी स्थापना कर देते, और जहां समाज की स्थापना हो चुकी थी वहां उसके पुष्ट करने का उद्योग करते थे। धर्म-चर्चा-समारोह भी सभी जगह होता रहा। मेरठ से देहरादून और वहां से फिर मेरठ होते हुए महर्षि जी आगरा पहुंचे।

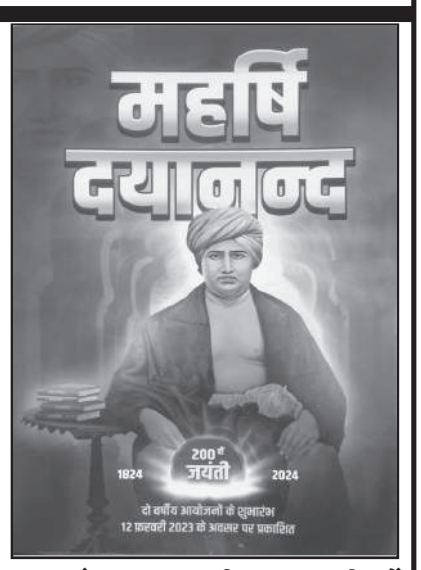

आगरा संयुक्तप्रान्त का अन्तिम नगर था, जिसमें महर्षि दयानन्द ने धर्म-प्रचार करके आर्यसमाज की स्थापना की। आगरा से संयुक्तप्रान्त और वहां से विदाई लेकर महर्षि राजपूताना की ओर प्रस्थित हुए। **-क्रमश:**

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Expansion of Arya Samaj

The venue of the lecture was far away from his place, due to which Lala Lakshmi narayan's car used to arrive on time and Swamiji was taken to the mandap. One day Swamiji reached the lecture hall one and a quarter hours behind the scheduled time. It was not in Swami ji's nature to err on the side of time. He felt very sorry for reaching late. At the very beginning of the lecture he said 'I was in time, but the train could not reach. At last he was coming on foot when he found a car on the way. The lapse of time is not my fault, but that of the children's children. It is not surprising that such weakness exists in the children of child marriage.

All the high state officials used to attend the lectures. Swami ji used to preach true religion without fear or consideration. Such an incident took place in Bareilly, due to which Swamiji's character is well depicted. The writers have described the incident in different languages as per their interest. Here Mahatma Munshi ram's description is quoted. It has been given in the form of biography of Pannu Lekh Ramji. Mahatma ji himself was present in the lecture, so his description is more accurate.

One day while giving a lecture, Swamiji Maharaj started criticizing the impossible things of the Puranas while criticizing their morals and teachings. At that time Pastor Scott, Mr. Red Collector District, and Mr. Edward Saheb Commissioner's Division, were present with fifteen-twenty more Englishmen. Swami ji, while discussing about the Panch Kumaris unmarrie of the Puranas, started describing each and every and lamented the wisdom of the Puranas. Even when Draupadi had five husbands, she was declared as a virgin and addressed Kunti, Tara, Mandodari etc. as virgins. It proves the ethical teachings of the Puranics to be worthless. Swami ji's style of narration was so humorous that the listeners could not get tired of it. On this, the Collector and Commissioner etc. used to laugh and express happiness. But after ending this topic, Swamiji Maharaj said- 'This is the leela of the Pauranics, now listen to the leela of the Kiranis! They are so corrupt that they tell about the birth of a virgin's son, then blame the ommipotent and ommician God and do not feel ashamed while committing such a heinous sin. After listening to that, the faces of the Collector and the commissioner turned red with anger. But Swamiji his lecture continued with the same force.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

पृष्ठ 4 का शेष

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती पूर्व सांसद ने अपने सम्बोधन में महर्षि दयानन्द को "स्वराज्य" शब्द का प्रथम उद्घोषक बताया। शहीदों के समूह को तैयार करने वाले महर्षि ही थे। रेवाड़ी में पहली पाठशाला 1876 में महर्षि की प्रेरणा से ही स्थापित की गयी थी।

विराट आर्य महाकुंभ को संबोधित करते हुए सभा महामंत्री विनय आर्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी को हम 200 वर्षों के बाद स्मरण कर रहे हैं और पूरे विश्व में उन्हें स्मरण किया जा रहा है। क्योंकि महर्षि ने ही भारत देश में परिवर्तन की क्रांति का सूत्रपात किया था, आपने बताया कि एक समय हमारे देश का शासन सारे विश्व पर था लेकिन महाभारत का युद्ध हुआ और जो हमारी वीरता थी या हमारे महापुरुष थे वह आपस में ही लड़कर चले गए। मुगलों ने पहले हमारे देश को लूटा और फिर हमारे ऊपर शासन किया। फिर अंग्रेज आए अंग्रेजों ने शासन किया और मुगलों के साथ लड़ाई-लड़ने वाले चाहे अंग्रेजी सेना थी या मुगलों की सेना, लड़ने वाले सब भारतीय थे। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने स्वराज की उद्घोषणा की और देश को बताया कि हम विश्व गुरु बन सकते हैं, हम अपने देश पर स्वयं शासन कर सकते हैं, परिणाम स्वरूप महर्षि की प्रेरणा के प्रताप से देश आजाद हुआ, आज जो आधुनिक भारत को हम देख रहे हैं उसके निर्माता महर्षि दयानंद सरस्वती ही हैं, ऐसे महर्षि को नमन करते हैं।

समारोह को प्रो. बिट्ठलराव जी हैदराबाद, प्रो. हरेराम त्रिपाठी, कुलपति कालीदास सँस्कृत विद्यालय नागपुर, श्रीमती कामिनी राठौर मेयर, प्रो. दिनेशचन्द्र शास्त्री, कुलपति सँस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार, आचार्या सुमेधा जी, अधिष्ठात्री गुरूकुल चोटीपुरा, श्रीमती हर्षिता सिंह-जिला पंचायत अध्यक्षा, रितु महेश्वरी, कमिश्नर आदि ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम में श्री रमेश रंजन जिलाधिकारी फिरोजाबाद, श्री शत्रुघन वैश्य, सी.डी.ओ. श्री विशु राजा, ए.डी. एम., श्रीमती संगीता जी ए.डी. एम., श्री अखिलेश भदौरिया एस.पी. ग्रामीण, श्री गजेन्द्र पाल सिंह, एस.डी.एम. टुंडला (कार्यक्रम प्रभारी) श्री रंजीत सिंह एस. डी.एम. सिरसा गंज, श्री धीरेन्द्र कुमार जिला विद्यालय निरीक्षक, श्री आशीष पाण्डेय, बी. एस.ए. श्री विनीत कुमार सी.ओ., श्री विशाल श्रीवास्तव जिला पर्यटन अधिकारी, डॉ. गुरूदत्त सिंह, श्री केशव सिंह, श्री कुशल देव शास्त्री, श्री ज्ञानेन्द्र मलिक, श्री रवि शास्त्री सहित सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश से पधारे आर्य नर-नारी गुरूकुल व विद्यालयों से अध्यापक, अध्यापिकायें, आचार्य व हजारों की संख्या में अन्य लोगों की गरिमाम उपस्थिति रही। समारोह का सफल संचालन डॉ. मुकेशमणि कांचन ने किया। अन्त में सभी आये हुए अतिथिगणों व आर्यजनों का आभार सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने व्यक्त किया। उन्होंने समस्त आर्यों का आवाहन ऋषि के बताये वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार पूर्ण पुरुषार्थ के साथ करने के लिये कहा। ऋषिवर दयानन्द ने तो विपरीत परिस्थितयों में अंग्रेजी शासन में निर्भीक होकर ईसाई मत की बखिया उधेड़ी, तो यह हमारी अकर्मयता व प्रमाद है जो हमारी सरकार होते हुए हम वैदिक धर्म का प्रचार नहीं कर पाते हैं। सच्चा आर्य समाजी कभी अपने सिद्धान्तों से समझौता नहीं करता, परिस्थितियाँ चाहें कितनी विपरीत क्यों न हों।

पुस्तक परिचय

भारत के परिवर्तन और परिवर्तन क्रांति के सत्य की गहराई और सच्चाई जानने के लिए अवश्य पढ़ें

परिवर्तन

(परिवर्तन आता नहीं - लाया जाता है।)

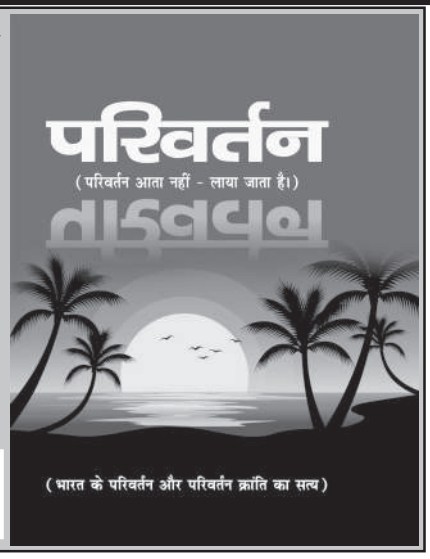

लेखक विनय आर्य
महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

पुस्तक खरीदने के लिए कोड स्कैन करें

इतिहास अपने आपमें उस कठोर पत्थर की भांति है जिसके ऊपर चाहे जितनी धूल पड़ती रहे, जमती रहे, वह दिखना बन्द हो जाए, उसकी कल्पना भी कोई न कर सके कि इस मिट्टी के नीचे कोई पत्थर होगा। पर जब कोई खोजी, यह जानकर कि यहां एक मजबूत चट्टान थी और उस धूल-मिट्टी के ढेर को हटाना शुरु करेगा तो एक समय ऐसा अवश्य आएगा कि वह धूल- मिट्टी हटाकर उस चट्टान को खोज लेगा। काले बादलों के आ जाने पर सूरज की रोशनी कुछ समय के लिए कम हो जाती है, पर समाप्त नहीं होती। ठीक वही स्थिति ऋषि दयानन्द के जीवन, उनके कार्यो और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज के कार्यो को लेकर भी रही। इतिहास लेखकों द्वारा या खासकर पाठ्य पुस्तकों में उनके जीवन-कार्यों को जिस तहर सम्मान/ स्थान दिया जाना चाहिए था, वह कभी नहीं मिल पाया, जिसके चलते एक बड़ा वर्ग उस जानकारी से वंचित रहा और एक वर्ग ने उनकी कुछ बातों को नकारात्मक रूप में बताने के लिए भरपूर प्रयत्न किया, परन्तु उन जैसे महान् तेजस्वी व्यक्तित्व का जिस प्रकार से परिचय समस्त मानव जाति के कल्याणार्थ होना चाहिए था, वह नहीं हो सका। उनके शिष्यों ने अपनी पूरी शक्ति उनके आदेशानुसार किए जाने वाले कार्यों में झोंकी, परन्तु प्रचार में वे कहीं पीछे ही रहे।

समय कभी-कभी अपने आप अवसर प्रदान करता है। उस महान् ऋषिवर की 200वीं जयन्ती शायद ऐसा ही अवसर है। आने वाला समय हमारी प्रतीक्षा कर रहा है, समय के साथ-साथ चुनौतियां भी। अत: उनका सामना हम बेहतर तरीके से कर सकें, इसके लिए जरूरी है कि हम कुछ समय अपने अतीत में जाएं और विचारपूर्वक सोचें कि आने वाले समय की चुनौतियां, क्या 150 वर्ष पूर्व की चुनौतियों से ज्यादा हैं, तो हमें उत्तर मिलेगा, शायद नहीं, ऋषि दयानन्द जी के जीवन/कार्यों और दर्शन को समझने से पूर्व हमें इतिहास पर दृष्टि डालनी होगी। प्रस्तुत पुस्तक में इन सारे विषयों पर हम पांच चरणों में विचार करेंगे-

सृष्टि के आरम्भ से

पहला-आदि सृष्टि (सृष्टि के आरम्भ से) महाभारत के युद्ध से पूर्व का गौरवकाल (5000 वर्ष पूर्व तक)

दूसरा- महाभारत के युद्ध से कुछ समय पूर्व बनी परिस्थितियां एवं महा भारत के युद्ध के परिणाम।

तीसरा- महाभारत के पश्चात् से 18वीं और 19वीं सदी तक का भारत।

चौथा- महर्षि दयानन्द जी के समय की परिस्थितियां और उनके द्वारा किया गया परिवर्तनकारी कार्य।

पांचवां-वर्तमान युग की उन चुनौतियों /समस्याओं की चर्चा और समाधान के तत्व जो हमारे मूल अस्तित्व को पूरी तरह समाप्त करने को तैयार हैं।

पुस्तक के अन्त में विशेष परिशिष्ट भी दिए गए हैं, जो विषय के विस्तार में सहायक होंगे। (1) महर्षि द्वारा स्थापित आर्यसमाज का विश्व में फैला वर्तमान संगठन और सेवा कार्य।

(2) महर्षि दयानन्द के शिष्यों की श्रृंखला का संक्षिप्त परिचय।

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

पृष्ठ 2 का शेष

सम्भल बवाल हिंसा आगजनी के बीच सवाल?

याचिका में आगे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की भी आलोचना की गई है, कि वह साइट पर नियंत्रण करने में विफल रहा, क्योंकि यह 1958 के प्राचीन स्मारक और पुरातात्विक स्थल और अवशेष अधिनियम के तहत एक संरक्षित स्मारक है। याचिकाकर्ता हिंदुओं के लिए मस्जिद तक अप्रतिबंधित पहुंच की मांग कर रहे हैं, यह दावा करते हुए कि उनके पूजा के अधिकार का अवैध रूप से खंडन किया जा रहा है। विष्णु शंकर जैन ने कहा कि यह एएसआई संरक्षित क्षेत्र है। यहां कई संकेत और प्रतीक हैं, जो दर्शाते हैं कि यहां मंदिर था।

अगर मामले को समझें तो सीएए प्रोटेस्ट से लेकर हर जगह मुस्लिम नेता देश को संविधान से चलाने की बात करते हैं। संविधान की कॉपी हाथ में लेकर नारे लगाते हैं, लेकिन इसी संविधान के अनुसार जब कोर्ट कोई आदेश करता है, तो उसे न मानकर बवाल मचाते हैं। तीन तलाक का मामला या सीएए का वक्फ बोर्ड के खिलाफ मामला हो या नाबालिग बच्चियों की शादी को लेकर कानून, हर जगह शरियत का ढोल पीटते हैं, फिर कहते हैं देश संविधान से चलना चाहिए।

दूसरा, उत्तर प्रदेश के संभल में जामा मस्जिद को लेकर तमाम आलिम मौलाना मुस्लिम नेता कह रहे हैं कि मस्जिद मंदिर तोड़कर नहीं बनी। ठीक है, बात मान ली जाए लेकिन जब सर्वे होना है तो किस बात का डर? अगर मस्जिद मंदिर तोड़कर नहीं बनी तो खुद खड़े होकर सर्वे कराना चाहिए? **-संपादक**

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।- ***संयोजक 9650183335***

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

शोक समाचार

श्री नरेन्द्र हुड्डा जी को पत्नीशोक

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के प्रधान श्री नरेन्द्र हुड्डा जी की धर्मपत्नी श्रीमती अनिता हुड्डा जी का दिनांक 22 नवम्बर, 2024 की प्रात: आकस्मिक निधन हो गया। वे काफी लम्बे समय से अस्वस्थ चल रही थीं। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 1 दिसम्बर, 2024 को उनके बहादुर गढ़ स्थित आवास पर सम्पन्न होगी।

पद्मश्री दयाल मुनि आर्य जी का निधन

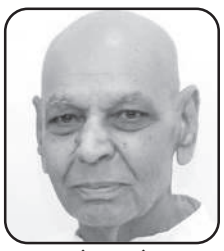

आर्यसमाज के विद्वान, चारों वेदों का गुजराती में अनुवाद करे वाले, पद्मश्री से सम्मानित श्री दयाल मुनि आर्य जी का 90 वर्ष की आयु में दिनांक 14 नवम्बर, 2024 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 17 नवम्बर, 2024 को श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा में सम्पन्न हुई, जिसमें गुजरात सभा, सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों एवं उनके निजी परिवाजनों सहित निकटवर्ती आर्यसमाज के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री नरेन्द्र कुमार आनन्द जी को पत्नीशोक

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के पूर्व संचालक श्री वीरेन्द्र आर्य जी के भाई एवं आर्यसमाज मेन बाजार रानी बाग के सदस्य श्री नरेन्द्र कुमार आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती सीमा आनन्द जी का दिनांक 20 नवम्बर, 2024 को आकस्मिक निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ पंजाबी बाग शमशान घाट में सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 23 नवम्बर, 2024 को आर्यसमाज रानी बाग में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों एवं उनके निजी परिवाजनों सहित आर्यसमाज के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 25 नवम्बर, 2024 से रविवार 1 दिसम्बर, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 28-29-30/11/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 27, नवम्बर, 2024

ओ३म्

200 महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

महर्षि दयानन्द के अनन्य शिष्य, महान राष्ट्रभक्त, शिक्षाविद् आर्य समाज के नेता, स्वतंत्रता सेनानी, अमर बलिदानी

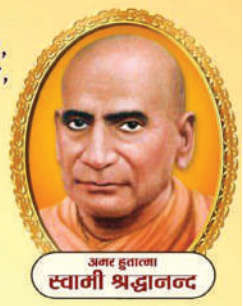

स्वामी श्रद्धानन्द

98वाँ बलिदान दिवस

बुधवार 25 दिसम्बर 2024

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयंती के विशेष आयोजनों की श्रृंखला में

भव्य शोभायात्रा व सार्वजनिक सभा

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

यज्ञ : प्रात: 8 से 9:30 बजे

शोभायात्रा का प्रारम्भ : प्रात: 10 बजे

सार्वजनिक सभा : मध्याह्न 12:30 से 3:30 बजे

रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली-2

इस अवसर पर वैदिक विद्वानों एवं आर्य कार्यकर्त्ताओं को स्मृति पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जायेगा

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन का परिचय दें

निवेदक

सुरेन्द्र कुमार रैली	मनीष भाटिया	आर्य सतीश चड्ढा
प्रधान	कोषाध्यक्ष	महामन्त्री
9810855695	9910341153	9313013123

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पंजी०)

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

प्रतिष्ठा में,

विश्वभर में आर्यसमाज की लहराती पताकाओं को दर्शाता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वर्ष 2025 का कैलेण्डर प्रकाशित

आर्यसमाजें अधिकाधिक सख्या में अपने नाम से छपवाकर प्रचार करें

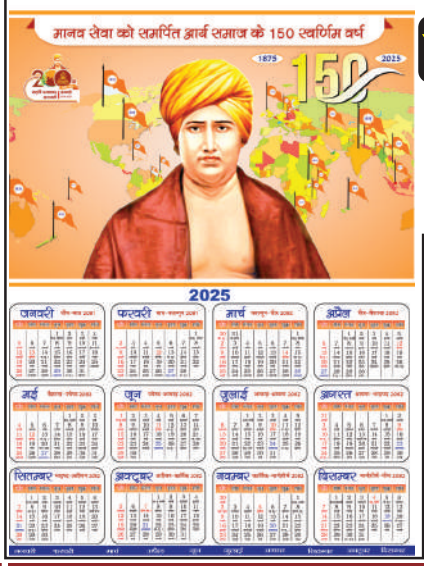

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 प्रतियों से अधिक के आर्डर पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें

www.vedicprakashan.com

ओ३म्

भारत में फेले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16

विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16

पॉकेट संस्करण

विशिष्ट पॉकेट संस्करण

सत्यार्थ प्रकाश
अंग्रेजी अजिल्द

स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8

सत्यार्थ प्रकाश
अंग्रेजी सजिल्द

उपहार संस्करण

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह